KURUKSHETRA UNIVERSITY KURUKSHETRA

[Established by the State Legislature Act XII of 1956]

('A+' Grade, NAAC Accredited)

AQAR-2020-21

3.4.6: Documents for books and chapters in edited volumes published per teacher during the Session 2020-21:

Name of Department: **Fine Arts**

Name of Teacher(s): Dr. Jaya Daronde

3

प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक कला में प्राकृतिक संसाधन एवं तकनीक का प्रयोग

■ जया दारोडे*

सारांश

प्राकृतिक विरासत सभी जीव जंतु एवं मनुष्य के लिये उपयोगी है। प्रागैतिहासिक काल से आज तक मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया है। चाहे व जीवन उदरनिर्वाह के लिये हो या कला के लिये। भारतीय कला में प्राकृतिक संसाधनों की बहुत लम्बी परंपरा और इतिहास है परंतु जलवायु परिस्थितियों के कारण बहुत कम प्रारंभिक उदाहरण बचते है। भारतीय चित्रकला के इतिहास का प्रत्यक्षदर्शी उदाहरण भित्ति-चित्रों से ही शुरू होता है और भित्ति-चित्रों की परम्परा जोगीमारा गुफा से शुरू होकर अजन्ता तक जाती है। परंतु मिर्जापुर, मानिकपुर, सिंघनपुर, होशंगाबाद, रायगढ़, पंचमढ़ी, भोपाल, रायसेन, ग्वालियर आदि विविध क्षेत्रों में स्थित गुफाओं की भित्तियों पर चित्र देखे जा सकते है एवं राजस्थान के महलों की सजावट में भित्ति चित्र बने है। जैसे आगरा एवं फतेहपुर सीकरी में अकबर ने, लाहौर और काश्मीर के राजकीय भवनों में जहांगीर ने, आमेर किला में सवाई जयसिंह ने व राजस्थान के प्रायः जितने भी किले, प्राचीन मंदिर है सभी में भित्ति चित्र निर्मित मिलते है। इस भित्ति चित्र के कई उदाहरण हम भारतीय कला इतिहास में देखते हैं। कला एक क्रिया है जो सहज और संयमित है। यह प्रकृति की प्रक्रिया से भिन्न तथा विपरीत है। कला प्रकृति को नियन्त्रित करने वाली एक बौद्धिक पद्धति है। मानवीय क्रिया कलापों की दृष्टि से कला का क्षेत्र शिल्प, स्थापत्य, उद्योग, औषधि-विज्ञान, धर्म एवं शिक्षा तक विस्तृत है। प्रत्येक कला अपने अनुकूल उपकरणों व विधियों को जन्म देती है। इन्हीं विधियों को हम विभिन्न 'शैली'

---

* असिस्टेंट प्रोफेसर, ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

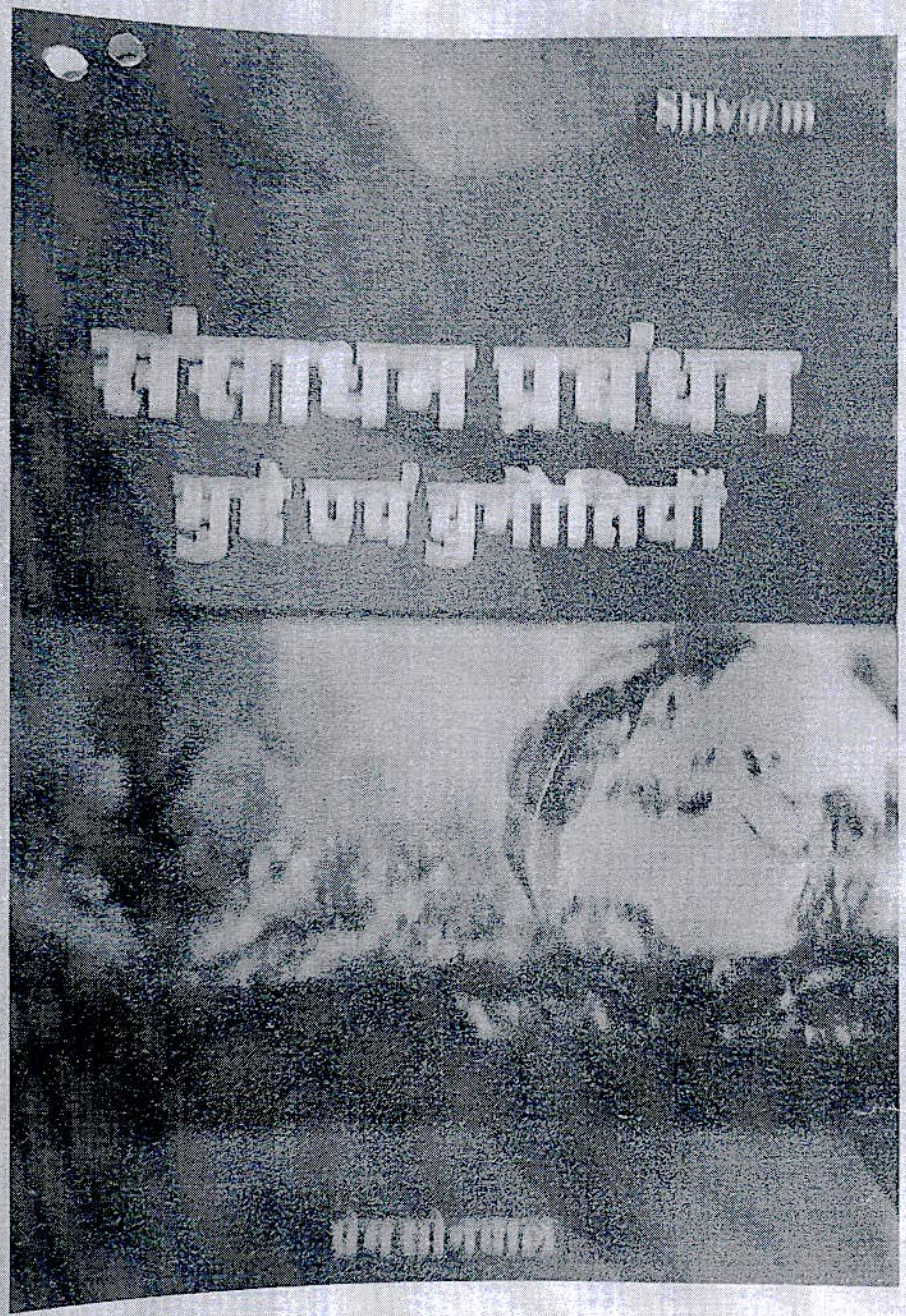

प्रेम सोनवाल

सम्पादक का परिचय

[illegible]

आयश्यक कर रहे हैं।

पुस्तक का परिचय

प्रस्तुत पुस्तक [illegible] प्राकृतिक संसाधन एवं सतत विकास [illegible] में महिलाओं की भूमिका आदि है।

इस पुस्तक में सम्मिलित अध्याय हैं- [illegible] जल-प्रबंधन, छत्रपति शिवाजी महाराज [illegible] में प्राकृतिक संसाधन एवं तकनीक का प्रयोग, संसाधन एवं सतत् विकास, सतत् विकास की अवधारणा तथा अनुपालन, [illegible] प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका, [illegible] वर्तमान समय में, पर्यावरण संरक्षण : वर्तमान की महती आवश्यकता, पर्यावरण असंतुलन : मानव अस्तित्व को खतरा, नैतिक मूल्य और पर्यावरण, पर्यावरण संरक्षण में [illegible] की भूमिका, प्राचीन काल में भारत का आर्थिक विकास, पर्यावरण प्रबंधन, [illegible] पोषणीय कृषि के विविध आयाम, जल की शुद्धता की वर्तमान परिदृश्य में वैज्ञानिक प्रासंगिकता व समीक्षा, जलवायु परिवर्तन : एक वैश्विक चुनौती, कृषि की समस्या एवं समाधान : [illegible] जिले के संदर्भ में, भारत में नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत, [illegible] में प्राकृतिक चेतना व चेतावनी (वर्तमान परिपेक्ष्य)।

प्रस्तुत पुस्तक शोधकर्ताओं, भूगोलवेत्ताओं, वैज्ञानिकों, [illegible] और पर्यावरणीय कार्यकर्ताओं के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में रुचि रखने वाले विद्वानों को भी लाभप्रद होगी।

Shivam Book House (P) Ltd.
1-13, SOM House, Shanghi Ji Ka Rasta,
Chaura Rasta, Jaipur-302 001
Phone: 0141-2316764, 9829196794,
e-mail : [illegible]@gmail.com

Price : 675/-

ISBN : 978 [illegible]